दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL9**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 09 16/10/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 2 1 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

उत्तम

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 140

टिप्पणी (Remarks):

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) नाथ-साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

~~[illegible]~~

बौद्धमत से प्रभावित किन्तु उससे विरोधी (प्रवृत्ति के स्थान पर निवृत्ति मार्ग के अनुयायी) नाथ संप्रदाय के साधुओं द्वारा अपनी सांप्रदायिक मान्यताओं के प्रचार हेतु लिखा गया साहित्य है।

नाथपंथी योगी यूँ तो मध्यप्रदेश के पश्चिमी भूभाग में 10वीं शताब्दी से 14वीं शताब्दी तक सक्रिय थे और मूलतः अर्धमागधी अपभ्रंश में अपनी रचनाएं करते थे परन्तु घूम-घूम कर प्रचार करने के कारण उनके साहित्य पर विभिन्न बोलियों का प्रभाव पड़ा और खड़ी बोली भी उनमें मिलती है

<u>यथा</u>: "नौ लख पातरि आगे नाचे, पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसौ मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा"

उपरोक्त उदाहरण में इकारान्तता, आकारान्तता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदि की प्रवृत्तियाँ खड़ी बोली से संबंधित हैं। इसी प्रकार

"जोगी सोई जाणिये, जग ते रहे उदास
तत् निरंजण पाइये, कहे मछंदरनाथ"

में न के स्थान पर 'ण' के प्रयोग की प्रवृत्ति खड़ी बोली के स्वरूप की परिचायक है।

नाथ संप्रदाय का ही प्रभाव आगे चलकर भक्तिकाल के संत संप्रदाय पर पड़ा तब भी कहना न होगा कि खड़ी बोली का प्रभाव आरंभिक स्तर का ही है, यहाँ खड़ी बोली बहुत विकसित रूप में दिखाई नहीं देती है।

6/14

6ud

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) अपभ्रंश की कारक-व्यवस्था

अपभ्रंश मध्यकालीन आर्यभाषाओं में 5 वीं शताब्दी से 11 वीं शताब्दी तक प्रचलित रहने वाली भाषा है तथा इसका महत्व प्राचीन एवं आधुनिक आर्यभाषाओं के बीच की संयोजन कड़ी के रूप में है।

अपभ्रंश की व्याकरण व्यवस्था ही आगे चलकर हिन्दी व्याकरण का आधार बनी जिसमें कारक व्यवस्था का रूप कुछ इस प्रकार है :—

1. निर्विभक्तिक प्रयोग व परसर्गों का विकास : अपभ्रंश में पालि, प्राकृत से चली आ रही वियोगीकरण की प्रवृत्ति का विकास हुआ तथा निर्विभक्तिक प्रयोगों की संख्या बढ़ने लगी।

2. इसके दूसरे चरण में 'हिं' विभक्ति से ही कई सारे (कर्ता, कर्म, अपादान) ~~आदि कारकों~~ कारकों का प्रयोग होने लगा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. सभी प्रातिपादिक स्वरान्त हो गए तथा व्यंजनान्त प्रातिपदकों का प्रयोग समाप्त होने लगा यथा → महान् → महा।
~~इसलिए~~ इस व्यवस्था के अगले चरण के रूप में सभी स्वरान्त प्रातिपदिकों में विभक्ति चिन्ह 'अकारान्त' अनुसार ही प्रयोग होने लगे।

3. संज्ञा के रूप जो एक लिंग के लिए 24 थे वे यहाँ 6 रह गए क्योंकि कारकों में विभक्ति चिह्नों के प्रयोग के लिए 3 समूहों में व्यवस्था बनी।
1. कर्ता, कर्म, संबोधन
2. अपादान, संप्रदान
3. करण, अधिकरण, संबंध

~~4. मुख्य परसर्गों इस प्रकार थे~~
~~1. कर्ता →~~

6/10

(4) संबंध कारक के लिए 'के रूप' परसर्गों का विकास इस काल की मुख्य विशेषता रही जो आगे भी कायम रही।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) हिंदी भाषा और 'केंद्रीय हिन्दी निदेशालय'

स्थापना वर्ष ? नहीं की

केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करने वाली संस्था है जो अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए हिन्दी का प्रशिक्षण एवं हिन्दी के प्रयोग विस्तार हेतु लगातार सक्रिय है। इसके द्वारा किये जाने वाले प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं :—

1. अधिकारियों व कर्मचारियों के हिन्दी प्रशिक्षण हेतु ~~प्रवीण~~ प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ ~~स्तर~~ पाठ्यक्रमों का संचालन
2. हिन्दी में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा तथा डिग्री के पाठ्यक्रमों का पत्राचार माध्यम से संचालन
3. हिन्दी के नए लेखकों तथा गैर-हिन्दी भाषाई क्षेत्रों के लेखकों को सहयोग की व्यवस्था तथा प्रोत्साहन का कार्य
4. पाठ्यपुस्तकों व ऑडियो कैसेटों के माध्यम निःशुल्क वितरण के माध्यम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार का कार्य

5. हिन्दी भाषा हेतु समाजों तथा संगोष्ठियों का आयोजन

6. गैरहिन्दी भाषा के छात्रों तथा हिन्दी लेखकों के लिए प्रतिवर्ष पुरस्कारों की घोषणा

7. हिन्दी के क्षेत्र में कार्य करने वाली गैर सरकारी संस्थाओं को सहयोग

इस प्रकार केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय हिन्दी भाषा के मानकीकरण तथा विस्तार हेतु लगातार सक्रिय है तथा अहम भूमिका निभा रहा है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण

हिन्दी व्याकरण लेखन में पं कामताप्रसाद गुरु तथा किशोरीदास वाजपेयी के आगमन से पहले कई विदेशी भाषाविदों द्वारा हिन्दी भाषा के व्याकरण तैयार करने के प्रयास किये गये यथा ग्रॉउस कृत हिन्दी व्याकरण, जॉन गिलक्रिस्ट कृत व्याकरण। इसी कड़ी में कैलॉग का व्याकरण महत्वपूर्ण स्थान रखता है तथा उस दौर का सर्वाधिक मौलिक एवं प्रबुद्ध व्याकरण ग्रंथ माना जाता है। इसकी प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं :-

i) कैलॉग ने उर्दू को हिन्दी भाषा से ही व्युत्पन्न मानते हुए हिन्दी तथा उर्दू की व्याकरणिक संरचना में समानताओं को आधार बनाया तथा भिन्नताओं को अलग श्रेणी में रखा।

ii) कैलॉग ने अवधी व ब्रज से प्रभावित न होते हुए खड़ी बोली के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रचलित स्वरूप को व्याकरण में महत्व दिया तथा कुछ संशोधनों के साथ ~~उसी रूप~~ अपनाया

3. कैलॉग का व्याकरण प्रत्येक सिद्धान्त के साथ उदाहरण देते जाने की शैली के कारण बोधगम्य बना। यह वही शैली है जिसे आगे चलकर कामता प्रसाद गुरु तथा किशोरीदास वाजपेयी ने अपनाया।

इस प्रकार कैलॉग का महत्व व्याकरण ग्रंथों की महत्वपूर्ण आधारशिला रखने को लेकर अक्षुण्ण है।

ठीक है

2/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

विभिन्न गैरहिन्दी क्षेत्रों मुख्यतः बंगाल तथा तमिलनाडु में हो रहे हिन्दी विरोध तथा संविधान में उल्लेखित 15 वर्ष में अंग्रेजी समाप्त होने की अवधि नजदीक होने के बीच राजभाषा अधिनियम 1963 का संसद में पारित हुआ जिसके प्रमुख अंश इस प्रकार हैं।—

1. अंग्रेजी का प्रयोग उच्चतम न्यायालय तथा संसदीय कार्यवाहियों में 1965 के बाद भी यथावत् बना रहेगा जबतक कि समस्त अहिन्दी भाषी राज्यों की सहमति हिन्दी को राजभाषा बनाने को लेकर नहीं बन जाती।

2. त्रिभाषा सूत्र : राजभाषा आयोग 1955 द्वारा सुझाये गये त्रिभाषा सूत्र को इस अधिनियम में स्वीकार कर लिया गया जिसके अंतर्गत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रत्येक छात्र को 3 भाषाएँ सीखनी होंगी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा (अंग्रेजी)। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में कोई भी अन्य भारतीय भाषा तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाएगी।

3. सरकार हिन्दी के विकास एवं प्रयोग के विस्तार हेतु लगातार प्रयासरत रहेगी तथा कर्मचारियों, अधिकारियों हेतु प्रशिक्षण आदि की समुचित व्यवस्था करेगी।

4. इस प्रकार राजभाषा अधिनियम ने एक तरफ भाषाई विद्रोहों को शान्त किया परन्तु दूसरी तरफ हिन्दी के राजभाषा बनाने के स्वतन्त्रता संघर्ष के स्वप्न को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में काव्यभाषा के रूप में अवधी के विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'अवधी' पूर्वी हिन्दी उपभाषा का वह स्वरूप है जो लखनऊ, फैजाबाद, रायबरेली के आसपास के क्षेत्रों में प्रचलित है। ऐतिहासिक तौर से ही यह क्षेत्र 'अवध' क्षेत्र माना गया है।

अपने जन्म के समय से अवधी 'कोसली' तथा बैसवाड़ी नामो से भी प्रचलित रही। ~~सम~~ यह माना जाता है कि 'अर्धमागधी अपभ्रंश' का ही एक स्वरूप 'अवधी' के रूप में स्थिर हो गया।

अवधी के विकास की ~~चरम अवस्था~~ प्रक्रिया यूँ तो आदिकाल से ही प्रारम्भ हो थी परन्तु मध्यकाल में '~~चंदायन~~ मुल्ला दाऊद द्वारा रचित 'चंदायन' ने अवधी के विकास और विस्तार को ऊँचाईयां दी। 'चंदायन' की अवधी सूफी परंपरा का ~~प्रथ~~ प्रणयन तो करती ही है साथ ही अवधी को ठेठ रूप में स्वीकार करते हुए इसे संवेदना की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अभिव्यक्ति का माध्यम बनाती है -

" बाउब कवि जो चांदा गाई
जेहि के सुना सो गा मुरझाई"

इसके बाद कुतुबन की मिरगावती आदि ग्रंथ भी अवधी के विकास में सहायक हुए। किन्तु विकास के दौर में प्रमुख पड़ाव आया सूफी काव्य के क्षेत्र में मलिक मुहम्मद जायसी के आगमन से।

जायसी के द्वारा रचित पदमावत की भाषा अवधी के लोकमाधुर्य युक्त, ठेठ रूप की वाहिका बनी जिसकी प्रशंसा आचार्य शुक्ल प्रभृति आलोचकों ने भूरि-भूरि की है यथा -

" जायसी की भाषा का माधुर्य निराली है वह संस्कृत पर अवलंबित भाषा का माधुर्य नहीं, ठेठ अवधी का माधुर्य है।"

जायसी ने लोक प्रचलित मुहावरों के प्रयोग, यथा 'हिय फटा', 'सीधी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अँगुरि न निकसै घीउ' तथा 'दवँगरा' जैसे शब्दों से भाषा को लोकजीवन से ऐसा जोड़ा कि अवध क्षेत्र के बिम्ब पाठक की इंद्रियों में सहज ही जीवन्त हो जाते हैं।

जायसी की परम्परा से भिन्न 'गोस्वामी तुलसीदास' की अवधी यूँ तो संस्कृत व लोकभाषा के अद्भुत समन्वय को धारण करती है परन्तु गोस्वामी जी ने भाषिक कौशल का परिचय देते हुए 'हंसगामिनी' व 'अमृत' जैसे शब्दों को 'हंसगवनि' व 'अमिय' कर दिया ताकि भाषा पाठक को आनन्दित करे आक्रान्त नहीं। गोस्वामी तुलसीदास के महाकाव्य रामचरित मानस ने अवधी को जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आश्चर्य नहीं कि रामचरित मानस को आजतक का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य कहा जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उनकी भाषा के संदर्भ में शुक्ल जी का कथन है

" जायसी की पहुँच लोकभाषा के बहते माधुर्य स्रोत तक ही थी परन्तु गोस्वामी जी की पहुँच दीर्घ संस्कृत काव्य परम्परा की चाशनी के भंडार गृह तक भी पूरी पूरी थी।"

इस प्रकार मध्यकाल में सूफी परंपरा व रामकाव्य परंपरा में अवधी का चरम विकास हुआ और अवधी का स्वर्ण युग देखने को मिला।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'अवहट्ट' को एक स्वतंत्र भाषा मानने के औचित्य पर विचार करते हुए अवहट्ट की शब्दकोशीय विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

अवहट्ट और अपभ्रंश के एक ही भाषा होने और अवहट्ट के स्वतन्त्र भाषा के दर्जे को लेकर भाषाविदों में विवाद की स्थिति है।

विवाद का मूल नामकरण के अर्थ को लेकर है चूंकि 'अपभ्रंश' और 'अवहट्ट' दोनों ही 'भ्रष्ट भाषा' को परिचायित करती हैं, पुनः कोई भी ऐसा ग्रंथ नहीं मिला है जहां अपभ्रंश और अवहट्ट की अलग-अलग चर्चा हो। तब भी आम सहमति यही है कि अवहट्ट एक स्वतन्त्र भाषा है जो 9वीं से 11वीं शताब्दी तक प्रचलित रही। इसका मुख्य आधार 'कीर्तिलता' (विद्यापति) को माना गया है जहाँ वे अवहट्ट की अवधारणा में लिखते हैं

"सक्कय बाणी बुहयन भावइ
पाउअ रसं को मम्म न पावइ
देसिल बअना सब जन मिट्ठा
तं तैं सम जंपउ अवहट्ठा।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~इस~~ अवहट्ट की शब्दकोशीय विशेषताओं में भी अपभ्रंश से वृहद समानता दर्शित होती है। चूंकि अवहट्ट का विस्तार संस्कृत के सरलीकरण से ही हुआ अतः स्वाभाविक है कि संस्कृत से आए शब्दों का विकृत रूप यहाँ विशाल मात्रा में उपलब्ध है यही कारण है कि अवहट्ट में तद्भव शब्दों की मात्रा सर्वाधिक है। तद्भव के पश्चात् सर्वाधिक मात्रा देशज शब्दों की मिलती है क्योंकि क्षेत्र विशेष की लोकभाषा के शब्द अनायास ही भाषा में मिल जाते हैं यथा खिखणी (लोमड़ी) इत्यादि। ऐसे शब्द मुख्यतः ध्वन्यात्मक (किल - किल) या घरेलू वस्तुओं के नाम आदि हैं।

अवहट्ट के विकसित दौर में तत्सम शब्दों का प्रयोग भी बढ़ने लगा। इसका कारण एक तो ब्राह्मणों का बढ़ता प्रभाव था और दूसरा अति जरती

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

…ण के कारण आई दुरूहता यथा शुद्ध, बुद्धि और सुख के लिए 'सुत्त' का प्रयोग।

विदेशज शब्द भी भाषा में दिखते हैं जो अन्य परंपराओं के प्रभाव का परिचायक है परन्तु ऐसे शब्द बहुत कम हैं या हैं भी तो मुख्यतः फ़ारसी, तुर्की आदि के हैं।

इस प्रकार अवहट्ट 14 वीं शताब्दी तक साहित्यिक रूप से प्रचलित रही और हिन्दी के विकास का आधार बनी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के विकास में राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिन्द' के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा के विकास में राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द भारतेन्दु पूर्व युग में विशेष महत्व रखते हैं।

राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' स्वयं एक रचनाकार भी थे तथा व्याकरणकार भी। इन्होंने 'इतिहास तिमिरनाशक', 'भूगोल हस्तामलक', 'रानी केतकी की कहानी' जैसी कई रचनाओं का प्रणयन किया तथा हिन्दी साहित्य को एक समृद्ध परम्परा प्रदान की।

उनकी शुरुआती रचनाओं में हिन्दी का तत्समीकृत रूप देखने को मिलता है यथा 'भूगोल-हस्तामलक' में परन्तु शिक्षा विभाग का अधिकारी बनने के बाद उनकी भाषा में 'फारसी' का प्रभाव बढ़ता गया जो 'इतिहास तिमिरनाशक' में सबसे प्रखर है।

इस प्रकार उनकी भाषा उर्दू-फारसी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मिश्रित हिन्दुस्तानी बनी जिसका प्रणयन बाद में 'भारतेन्दु हरिश्चन्द', प्रेमचन्द व उपेन्द्रनाथ अश्क प्रभृति रचनाकारों ने किया।

देवनागरी लिपि के विकास में सितारे हिन्द का योगदान प्रारंभिक योगदान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उन्होंने लिपि के मानकीकरण का प्रयास करते हुए विभिन्न अक्षरों का रूप तय किया तथा अंकों के रूप निर्धारण का भी कार्य किया।

इस प्रकार राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द का योगदान भाषाई समन्वय व एक प्रबुद्ध परम्परा के प्रवर्तन को लेकर अमूल्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव दीजिए।

देवनागरी लिपि का मानकीकरण एक अनवरत प्रक्रिया है। जिसमें हर व्यवस्था की भाँति सुधार की गुंजाइश सदैव बनी रहती है।

देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं।

ध्वनि योजना व संकेत

1. ऐसी ध्वनियाँ जिनका प्रयोग अब प्रच-लन में नहीं है उन्हें लिपि से पृथक कर देना चाहिए। उदाहरणार्थ दीर्घ ऋ, ह्रस्व लृ तथा दीर्घ लॄ

2. 'ष' के उच्चारण के कोई संकेत अब नहीं मिलते अतः तत्सम शब्दों के अलावा इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए

3. अंग्रेजी के कुछ शब्दों यथा डॉक्टर, आदि में ऊपर चाँद लगाने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की परम्परा चल पड़ी है जो उचित है इसे स्वीकृति मिलनी चाहिए।

4. अन्य भाषाओं के कुछ संकेत हिन्दी में नहीं मिलते यथा
द्रविड़ भाषाओं में — ग़, ऱ, ज़, ऩ, ऴ, न तथा ऎ, ऒ (दोनों ह्रस्व)
सिंधी से - ग़ ज़ द़ ब़
कश्मीर - ऑ
असमिया - य़
इन्हे हिन्दी में सम्मिलित करने हेतु देवनागरी में संकेतों की व्यवस्था होनी चाहिए, नुक्ते के प्रयोग से ऐसा संभव है।

5. अंग्रेजी व फारसी में प्रयुक्त ज़, फ़ का प्रचलन नुक्ता लगाकर चल पड़ा है इसे स्वीकृति मिलनी चाहिए।

6. अनुनासिक का प्रयोग ङ, म के स्थान पर उचित है परन्तु वाङ्मय जैसे शब्दों के लिए ङ् बना रहना चाहिए

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अनुस्वार तथा अनुनासिक

1. यदि अर्द्ध न या अर्द्ध म के बाद वर्ण उसी समूह के हों तो अनुस्वार का प्रयोग अन्यथा 'न' या 'म' का प्रयोग होना चाहिए। उदाहरण - सम्बन्ध → संबंध

2. अनुनासिक के लिए चंद्रबिन्दु का प्रयोग होना चाहिए। यदि वर्ण के ऊपर मात्रा है तो बिन्दु का प्रयोग उचित है।

संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग

1. यह प्रयोग स्थानलाघव व समयलाघव तथा वैज्ञानिकता की दृष्टि से उचित है।

भिन्नता की समस्या

1. 'मानक वर्ण संकेत को स्वीकृति मिलनी चाहिए। यथा भ और झ में 'झ' को

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विरामचिह्न व हाइफन

1. अर्द्धविराम के प्रचलन को बढ़ाया जाना चाहिए
2. द्वंद्व समास में हाइफन का प्रयोग होना चाहिए
3. कर्मधारय व ~~तत्पुरुष~~ बहुव्रीहि में हाइफन का प्रयोग आवश्यक नहीं है यदि दोहरे अर्थ की संभावना न हो तो। यथा रामराज्य में हाइफन का प्रयोग नहीं होना चाहिए परन्तु भूतत्व में आवश्यक है
4. कठिन संधियों में हाइफन का प्रयोग किया जा सकता है। यथा

जगत् + निःसारता → ~~जगन्निःसारता की~~

जगन्निःसारता की बजाय जगत्-निःसारता

उपरोक्त सुझावों को अमल में लाने से लिपि व्यापक एवं सार्वदेशिक बनने में सहायक होगी।

12/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास को आप संतोषजनक मानते हैं? विचार कीजिये। 15

हिन्दी भाषा को ~~सहभाषा~~ व राजभाषा न बनाने के कारणों के पीछे एक तर्क यह भी दिया जाता रहा है कि यह एक पिछड़ी भाषा है तथा इसमें व्यावसायिक व तकनीकी शिक्षा का माध्यम बनने की पर्याप्त योग्यता नहीं है।

कारणों पर विचार करें तो यह एक भ्रामक कथन के अलावा कुछ नहीं। यह सत्य है कि उपनिवेशवाद व औद्योगिक क्रान्ति यूरोप में पहले आने के कारण तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा का ज्यादातर साहित्य अंग्रेजी में ही उपलब्ध है परन्तु यह हिन्दी की कमजोरी का प्रतीक नहीं।

असंतोष व दुख की बात तो यह है कि स्वतन्त्रता पश्चात भी हिन्दी को इस क्षेत्र में प्रयोग में जो गति मिलनी चाहिए थी वह नहीं मिली।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शब्दों का अनुवाद करके शब्दावली का विकास तो किया गया परन्तु नौकरशाही व राजनीतिक वर्ग में इच्छाशक्ति की कमी व आभिजात्यता से मोह के कारण इन शब्दों को व्यापक प्रयोगगत विस्तार नहीं मिल पाया। तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा का मुख्य माध्यम अंग्रेजी ही बनी रही।

अनुवाद के कार्य में संख्यात्मक वृद्धि तो आई परन्तु गुणात्मक नहीं। अभी भी 'डायरेक्टर' व लैक्चरर जैसे शब्दों के अनुवाद में द्विलपता की स्थिति मिलती है। कई अनुवाद तो इतने कठिन हैं कि उनका प्रयोग आम जन के लिए सुग्राह्य नहीं यथा 'सस्टेनिबल' का अनुवाद 'संधारणीय' किया गया जबकि 'टिकाऊ' शब्द आसान व उपयोगोचित है।

अत: आवश्यकता इस बात की है कि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिन्दी भाषा में अनुवाद व नवीन अवधारणाओं में मौलिक शब्दावली के विकास को गति मिले तथा इन्हें प्रयोग में लाकर सुग्राह्य व सुबोध बनाया जाए।

तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा की उपलब्धि हिन्दी में व्यापक तौर पर सुनिश्चित की जाए ताकि 'एक हृदय हो भारत जननी' के स्वप्न को सार्थक किया जा सके।

7

और प्रभावी निष्कर्ष मॉडल उत्तर देखें।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दक्खिनी हिन्दी के विकास में आदिलशाही वंश के शासकों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदिलशाही वंश का ~~यमेन~~ बीजापुर में शासन दक्खिनी हिन्दी के विकास का प्रमुख स्तम्भ रहा है।

इस वंश के सभी शासक कलाव्यसनी, संस्कृतिप्रेमी तथा स्वयं उच्च साहित्यिक गुणों से युक्त थे।

इस वंश के चौथे शासक इब्राहिम आदिल शाह के सुन्नी धर्म में परिवर्तित होने के बाद फारसी का प्रभाव कम हुआ तथा दक्खिनी का प्रभाव राजकीय कार्यों में बढ़ा जिससे राजभाषा के रूप में दक्खिनी को प्रतिष्ठित किया। ~~परन्तु~~ इस वंश के अगले शासक इब्राहिम शाह द्वारा अथक प्रयास करने के बावजूद फारसी की पुनर्स्थापना नहीं हो सकी।

दक्खिनी के प्रयोग को बलंग मिली इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय की ताजपोशी से। इब्राहिम आदिलशाह स्वयं एक

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उच्चकोटि का साहित्यकार था। उसने 'नवरस' जैसी रचनाओं की रचना कर स्वयं तो महत्व स्थापित किया ही 'वली दक्नी' तथा 'वली औरंगाबादी' जैसे रचनाकारों को संरक्षण प्रदान कर दक्खनी साहित्य लेखन की दीर्घ परंपरा को विकसित किया।

आदिलशाही वंश का नाम दक्खनी हिन्दी के विकास के लिए बार-बार लिया जाएगा।

8/11

औसत से बेहतर उत्तर।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) विद्यापति की राधा

विद्यापति की राधा का महत्व जयदेव तथा चंडीदास की परम्परा की राधा के विस्तार तथा सौन्दर्य चेतना की वाहिका के रूप में तो है ही, उनके द्वारा प्रचलित राधा स्वरूप ने मिथिला क्षेत्र की कृष्ण भक्ति परंपरा में नये आयाम भी गढ़े।

विद्यापति ने राधा को किशोरी रूप में चित्रित किया है ताकि ~~सहज~~ चंचलता तथा जिज्ञासा के भाव सहज रूप से विद्यमान रहें। उनकी राधा का सौन्दर्य अपरूप का सौन्दर्य है। वे जहाँ-जहाँ चलती हैं ~~बिजली च~~ कमल खिलने लगते हैं, जहाँ अंग झलकते हैं तो बिजली चमकने के समान प्रभाव उत्पन्न होता है-

"जहाँ जहाँ पग युग धरई
तहँ-तहँ सरोरुह झरई

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'जहँ-जहँ झलकत अंग
तहँ-तहँ बिजुरि तरंग'

उनकी राधा का सौन्दर्य इतना मधुर है कि पूर्व कवि परम्परा से भिन्न कृष्ण भी राधा के शोक में व्याकुल प्रतीत होते हैं।

"राहि रहल दुर हम मथुरापुर
एतउ सहए परान"

विद्यापति की राधा कृष्ण से अगाध प्रेम करती हैं तथा उन्हे देखकर अघाती नहीं हैं, तृप्त नहीं होती ~~उनके यहाँ 'नयन न तिरपित भेल'~~ की स्थिति है।

इस प्रकार विद्यापति की राधा सौन्दर्य की वाहिका है तथा कृष्ण काव्यधारा के लिए प्रतिमान स्थापित करती है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) मुक्त छन्द

मुक्त छंद ~~से~~ छायावाद के महाप्राण कवि निराला की प्रयोगशीलता तथा सृजनात्मकता से उत्पन्न अवधारणा है।

निराला के अनुसार "मुक्त छंद वह है— "जो छंद की भूमि पर रहकर भी मुक्त हो" वे मुक्त छंद की अवधारणा में छंद की तुक व मात्राओं के बन्धन से मुक्ति की प्रस्तावना करते हैं। मुक्त छंद में लय तो होती है परन्तु वह आंतरिक लय है बाह्य नहीं।

निराला मुक्त छंद की अवधारणा को कविता से आगे ले जाते हुए मानव मुक्ति से संबंध स्थापित करते हैं और कहते हैं कि जिस प्रकार जगत की रुढ़ियों से मुक्ति में मानव मुक्ति है उसी प्रकार छंद की रुढ़ियो से मुक्ति ही मुक्त छंद है और यह ~~॰~~ उनकी नारी मुक्ति ~~तथा~~ के विचार का अगला चरण है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

निराला मुक्त छंद परंपरा को स्थापित करने हेतु वैदिक साहित्य का हवाला देते हैं और कहते हैं

"जब परमात्मा यह रबड़ छंद और केंचुआ छंद लिख सकता है तो मैंने कौन सा गुनाह कर डाला"

इस प्रकार मुक्त छंद आधुनिक कविता के संप्रेषण के अनुकूल एक नवीन अवधारणा है जो लगातार ~~प्रयुक्त~~ प्रयुक्त हो रही है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा

मैत्रेयी पुष्पा स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास लेखन की प्रमुख स्तम्भ है जिनका महत्व नवोदित 'स्त्री-विमर्श' की स्थापना व स्त्री की 'स्वयं-वेदना' को ध्यान में रखकर किये गये लेखन कर्म को लेकर अत्यधिक है।

मैत्रेयी पुष्पा उपन्यास की उसी धारा का प्रतिनिधित्व करती हैं जो कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी सम आधुनिक चेतना की वाहक लेखिकाओं के यहाँ प्राणशक्ति अर्जित कर रहा था।

उनके उपन्यासों में आर्थिक रूप से सशक्त होती आधुनिक नारी, शहरीकरण व औद्योगिकीकरण का नारी पर प्रभाव, नारी की यौन वर्जनाओं के अतिक्रमण तथा सामंती-मानसिकता से ग्रसित पुरुषों द्वारा नारी की स्वाधीनता को स्वीकार न कर पाने की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अभिव्यक्ति लगातार होती फिरती है।

3/10

प्रमुख उपन्यासों का उल्लेख करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) घनानंद का काव्य-शिल्प

घनानंद रीतिमुक्त काव्य परंपरा के ध्वजवाहक कवि हैं जो रीतिकाल के देहमूलक, भोगमूलक सौन्दर्य प्रधान वातावरण में भी 'प्रेम की पीर' से उत्पन्न भावना के लिए प्रतिबद्ध रहे तथा कविता एवं संवेदना को ही ध्यान में रखकर रचनाकर्म किया।

"लोग हैं लागे कवित्त बनावत
मोहे तो मोरे कवित्त बनावत"

यूँ तो घनानन्द का महत्व संवेदना को लेकर है किन्तु सहज काव्य शिल्प का सौन्दर्य भी उनके यहाँ अप्रतिम है यथा।

1) अलंकारों का सहज प्रयोग –

"तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला
मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं"

जैसी कविताओं में श्लेष अलंकार उनकी संवेदना की भावपूर्ण अभिव्यक्ति में गुणात्मक बढ़ोत्तरी करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी प्रकार सुजान के प्रेम तथा भक्ति भाव की मिश्रित संवेदना से रचित उनकी उक्तियों में अन्योक्ति की झलक अनायास दिख जाती है

"ए री नन्द अगाहो राधे, राधे, राधे, राधे
तोसे मिलवे को मनमोहन, बहुत
जतन है साधे"

घनानन्द की कविता में प्रकृति का आगमन तथा भी शिल्प में बढ़ोत्तरी करता है।

2. भाषा: घनानन्द चमत्कारपूर्ण भाषा का प्रयोग नहीं करते बल्कि सहज, सुबोध ब्रजभाषा को अपनाते हैं ताकि कविता में चमत्कार नहीं, संवेदना का स्फुरण हो सके।

इस प्रकार संवेदना को प्रधान रखते हुए भी उनका काव्य शिल्प अन्यतम ऊँचाइयों को छूने में सफल रहा है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ड़) 'अंधा युग' नाटक का महत्त्व

'अंधायुग' नाटक धर्मवीर भारती के रचनाकर्म का प्रसिद्ध स्तम्भ है जो इतिहास के वातावरण का आधुनिक संदर्भों में प्रयोग करते हुए उनकी सर्जनात्मकता की चरम अभिव्यक्ति करता है।

अंधायुग में महाभारत युद्ध के बाद की स्थितियों को कथानक का आधार बनाते हुए लेखक विश्वयुद्ध के बाद की भयावह स्थितियों को चित्रित करता है तथा मानव जीवन की क्षणभंगुरता को पाठक तक संप्रेषित करता है। अंधायुग में अस्तित्ववाद की 'लघुमानव' की अवधारणा का प्रभाव भी लगातार दिखता रहता है।

लेखक आधुनिकता से प्रभावित होकर किसी भी पात्र के नायकत्व या

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खलनायकत्व को स्थापित करने से बच रहा है तथा स्थितियों के वर्णन मात्र को प्रधानता दे रहा है इस प्रकार नाटक 'स्थितिप्रधानता' के संप्रेषण का वाहक बन पड़ा है।

लघुमानव की अवधारणा के बावजूद, तमाम संत्रास व नैराश्य के बावजूद लेखक आशा के दीप को जलाये रखने की बात करता है और मानव को संदेश देता है कि समस्त नैराश्य को समेट जीवन में सकारात्मक तत्व अपनायें।

इस प्रकार अंधायुग आधुनिक चेतना तथा ~~आशा~~ अभिव्यक्ति की ~~प्रधानता~~ सघनता को लेकर महत्वपूर्ण नाटक है।

5½

(आधुनिकता की भी चर्चा करें)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

~~ह~~ उपन्यास का सहज सम्बन्ध यथार्थवाद से उपन्यास कला की उत्पत्ति के समय से ही ~~ह~~ रहा है। जिन कारणों से (औद्योगिकीकरण, शहरीकरण) पश्चिम में उपन्यास का उदय हुआ। लगभग वही कारण कुछ भिन्न रूप में भारत में उपन्यास के जन्म के उत्तरदायी बने।

~~हे भी~~ कोई भी विधा अपने शुरुआती दौर में परिपक्वता का वह स्तर ग्रहण नहीं कर पाती जो अपेक्षित होता है। यही विचार हिन्दी उपन्यास के संदर्भ में भी लागू होता है। हिन्दी के शुरुआती उपन्यास यथा 'परीक्षागुरु', 'भाग्यवती' सम भारतेन्दु युग के हों ~~या~~ या 'चंद्रकान्ता' तथा 'सरकटी लाश' जैसे हों वे या तो उपदेशात्मकता की प्रवृत्ति से ग्रसित थे या फिर तिलिस्मी, ऐयारी ~~ह~~ व जासूसी प्रवृत्तियों से। इनका महत्व यथार्थवाद को लेकर विशेष नहीं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

गोदान (उपन्यास) और उपन्यासकारों की भी चर्चा करें

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यथार्थवाद के प्रवर्तन को लेकर छलांग मिली प्रेमचन्द के आगमन से।
'प्रेमचन्द ने हिन्दी उपन्यास की कर्मभूमि ही नहीं बदली उसका कायाकल्प भी कर दिया'। अपने शुरुआती दौर में वे गाँधीवादी हृदय परिवर्तन के सिद्धांतों में भरोसा करते रहे तथा आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की ओर झुकते रहे। ऐसे दौर में कहीं जमींदारों का हृदय परिवर्तन हुआ। कहीं सामंती पुरुषों का तब भी स्त्री समस्या, दलित समस्या पूँजीवाद व जमींदारी शोषण इनके यहाँ समग्र रूप में दिखता रहा।

अपने रचनाकर्म के अंतिम दौर में प्रेमचन्द ने आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का चोला त्यागकर परम यथार्थवाद को अपनाया तथा 'होरी की मौत' को टाला नहीं। उन्होंने स्थितियों का समाधान नहीं किया उन्हें ज्यों का त्यों संप्रेषित कर दिया। "उनकी पुकारती आँखें अंधेरा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

देखने का साहस कर पाई। 'गोदान' इस दौर के संगुम्फित यथार्थ का उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्रेमचन्द के बाद भी यथार्थ हिन्दी उपन्यास का प्राणतत्व रहा चाहे वह जैनेन्द्र व अज्ञेय का मनोविश्लेषणात्मक "मानसिक यथार्थ" हो या फिर रेणु का 'आंचलिक यथार्थ'। चाहे वह नये उपन्यास का मोहभंग हो या स्वयंवेदना से प्रेरित दलित विमर्श व स्त्रीविमर्श का यथार्थ।

आज भी हिन्दी उपन्यास यथार्थ की अभिव्यक्ति का वाहक बनकर पाठक की चेतना में गुणात्मक प्रभाव पैदा कर रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक राष्ट्रकवि के रूप में रामधारी सिंह 'दिनकर' के समादृत होने के कारणों का उद्घाटन कीजिए। 15

राष्ट्रकवि यूँ तो कोई औपचारिक या प्रशासनिक उपाधि नहीं है फिर भी सांकेतिक रूप में इस उपाधि का महत्व [illegible] है।

हिन्दी काव्य परंपरा में मैथिलीशरण गुप्त व रामधारी सिंह दिनकर सम कवियों को राष्ट्रकवि कहा गया है जिसके प्रमुख कारण उनकी लेखन शैली व काव्य के उद्देश्य में दिखते हैं।

राष्ट्रकवि के लिए आवश्यक है कि वह प्रत्येक वर्ग के लिए सुग्राह्य हो ताकि उसकी कविताओं का प्रभाव व्यापक हो, वर्गविशेष तक सीमित रहे। ऐसी स्थिति में कवि के लिए आवश्यक है कि वह अपनी बात सीधे-सीधे अभिधात्मक शैली में कहे यही लक्षण दिनकर के यहाँ दिखते हैं
" अपर सब कुछ शून्य-शून्य है कुछ भी नहीं गगन में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो कुछ भी है धर्मराज, इस मिट्टी में
जीवन में "

राष्ट्रकवि के लिए आवश्यक है कि उसकी कविता जनता की समस्याओं को धारण कर प्रत्येक व्यक्ति के हृदय से जुड़ने में समर्थ हों तथा आम जन का उद्बोधन करने की क्षमता रखती हों यथा

" दो राह समय के रथ का घर्घर
नाद सुनो
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है"

दिनकर का काव्य आम जन में जोश, उमंग व उत्साह भरने में सफल रहा तथा जनता के प्रत्येक वर्ग के हृदय तक पहुँचा।

तृतीय दिनकर स्वयं एक बहुत अच्छे मंचीय कवि भी थे ~~जिससे~~ तथा सघन आवाज के स्वामी थे। ~~इस प्र~~
इस प्रकार दिनकर का महत्व राष्ट्रकवि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

परंपरा में उच्च है और सर्वत बना रहेगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निराला की प्रगति-चेतना पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निराला का ~~कला~~ सर्जनाकर्म अपनी संवेदना में अत्यन्त विस्तृत है। एक तरफ वे भावातिरेक से पूर्ण छायावादी कविताओं का प्रणयन करते हैं तो दूसरी तरफ तत्कालीन परिस्थितियों से ~~विद्रोही~~ उद्वेलित होकर स्त्री, मजदूर व गरीब की संवेदना से जुड़ते हैं।

निराला की कविताओं जैसे भिक्षुक', वह तोड़ती पत्थर' आदि में उनकी प्रगति चेतना उत्कृष्ट रूप में दिखती है

वे
" वह तोड़ती पत्थर, ~~के~~ मैंने उसे देखा
इलाहाबाद के पथ पर" लिखते हुए मजदूर माँ का चित्रण करते हैं तो दूसरी तरफ -

" वह आता, ~~कु~~ दो टूक कलेजे के करता
पछताता, पथ पर जाता
पेट और पीठ मिलकर हो गए हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लिखकर अभियुक्त की व्यथा की मार्मिक अभिव्यंजना करते हैं। वे 'तोड़ो-तोड़ो तोड़ो कारा' से सारे सामंती बंधनों को तोड़ने का आह्वान भी करते हैं।

परन्तु प्रगतिवादी चेतना के संपृक्त होने के बावजूद वे विचारधारा की यांत्रिकताओं को नहीं अपनाते। वे 'कुकुरमुत्ता' जैसी कविताओं में स्पष्ट रूप से जड़ वैचारिक प्रतिबद्धता पर व्यंग्य करते हैं -

" पर हैं प्रोलितेरियन झगड़े जहाँ
मियाँ-बीबी के क्या कहने वहाँ "

निराला का व्यक्तित्व ही ऐसा है कि वे हर कुछ का उतना ही भाग स्वीकारते हैं जो उन्हें पसन्द है; चाहे वह छायावाद हो या प्रगतिवाद या फिर छंद। उनकी प्रगतिवादी चेतना भी इसी परंपरा की वाहक है।

6½

Copyright – Drishti The Vision Foundation